Class Notes स्नातक भूगोल प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष पत्र - तृतीय इकाई - पांच

प्रश्न: बिहार में सुखाड़ की स्थिति की समीक्षा या विवेचना करें ।

सूखा एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है,जिससे बिहार लगभग प्रत्येक साल प्रभावित होता है।बिहार भारत का एक ऐसा राज्य है,जो एक साथ बाढ़ और सूखे जैसी समस्याओं को झेलता है।जहाँ एक ओर उत्तरी बिहार बाढ़ जैसे गंभीर समस्या से ग्रसित है, वहीं दक्षिणी बिहार सूखे की समस्या से।जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी के चलते विगत कुछ वर्षों से वर्षा की मात्रा में अनियमितता व वारिश के मौसम में वर्षा की कमी देखने को मिल रही है,वहीं बिहार खासकर दक्षिणी बिहार में कम वारिश के चलते सूखे की स्थिति उतपन्न हो जाती है।

वस्तुतः सूखा ऐसी स्थिति को कहा जाता है जब लंबे समय तक कम वर्षा ,अत्यधिक वाष्पीकरण और जलाशयों तथा भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन से भूतल पर जल की कमी आ जाए।

सामान्यतः अनिश्चित व कम वर्षा के क्षेत्रों में वर्षा की विचलनशीलता अधिक होती है और यही क्षेत्र सूखा या सूखा ग्रस्त क्षेत्रों के अंतर्गत आता है।

सूखा क्षेत्र

बिहार के सूखा प्रभावित जिले

सिंचाई आयोग ने वर्षा की मात्रा और उसकी विचलनशीलता के आधार पर सूखा प्रभावित क्षेत्रों को दो निम्नांकित भागों में बांटा है।:-

1. सूखा क्षेत्र:-जहाँ 50 सेंटीमीटर से कम वर्षा होती हो और वर्षा की विचलनशीलता 25 प्रतिशत से अधिक होती है।
2. सूखा ग्रस्त क्षेत्र :- वैसे क्षेत्र जहाँ वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम व वर्षा की विचलनशीलता सामान्यतया 25 प्रतिशत होता है।

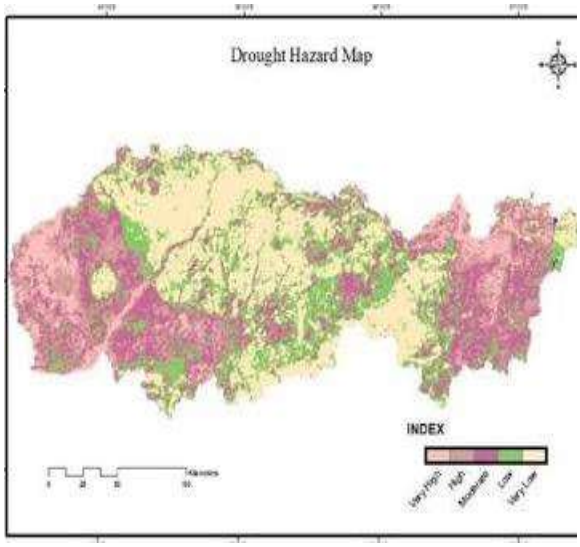

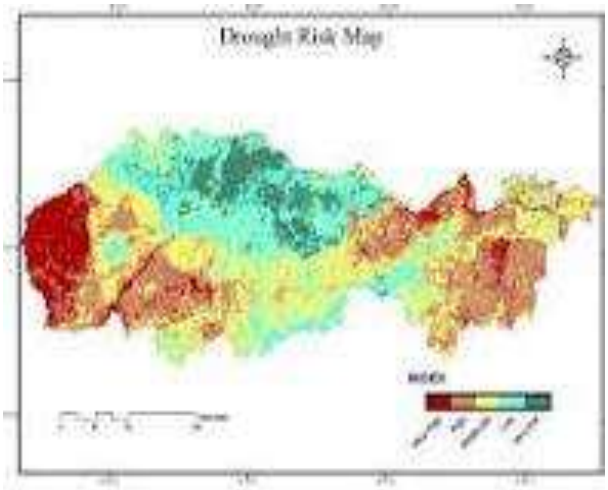

- बारिश की ऋतु में वर्षा की कमी ।
- वर्षा वितरण में अनियमितता।
- पेड़ पौधों की अत्यधिक कटाई।
- सिंचाई हेतु भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन।
- वर्षा जल संचय के उचित प्रबंध का अभाव |
- जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमन में वृद्धि।

- सूखा प्रभावित क्षेत्रों में वृहत पैमाने पर मवेशियों और अन्य पशुओं की मौत।
- जल की कमी के फलस्वरूप दूषित पानी से विभिन्न प्रकार की बीमारियों की उत्पत्ति जैसे-हैज़ा,हेपेटाइटिस इत्यादि।
- धूल से सम्बंधित बहुत सारी बीमारियों के होने का भय।
- जलाशय, झील,तालाब,पोखर में पानी बहुत कम जाता है या पूरी तरह से सुख जाता है।
- आर्द्र भूमि में कमी आती है।
- जंगलों में आग लगने की संभावना बढ़ जाती है।
- मिट्टी अपरदन भी बढ़ जाता।
- मिट्टी की गुणवत्ता में भी ह्रास होता है।
- सूखे से फसलों की बर्बादी होने से किसानों को आर्थिक हानि होती है।
- कृषि कार्य से सम्बंधित व्यापार पर भी बुरा असर पड़ता है।
- फसलों के बर्बाद होने और आर्थिक हानि होने के फलस्वरूप किसानों को अवसाद ग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है।
- आत्महत्या की समस्या
- सामाजिक अपराध बढ़ने की संभावना बहिन बढ़ जाती है जैसे-चोरी,डकैती, लूट इत्यादि।

तात्कालिक प्रयास

- स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था
- भोजन हेतू प्रयाप्त खाद्यान की व्यस्था
- पशुओं के लिए चारे व जल की व्यस्था
- आर्थिक नुकसान हेतु मुआवजा की व्यस्था
- कृषि हानि पर रियायत और सब्सिडी
- स्वाथ्य सुविधावों का उचित प्रबंध

- सामुदायिक जागरूकता

दीर्घकालिक प्रयास

- भूमिगत जल के भण्डारण का पता लगाना
- वर्षा के पानी का संग्रहण
- जल अधिक्य क्षेत्रों से अल्प जल क्षेत्र में पानी पहुँचाना
- नदियों को जोड़ना और बांध व् जलाशयों का निर्माण
- वनीकरण
- स्प्रिंकल सिंचाई को बढ़ावा देना
- शुष्क कृषि अपनाना (जिसमें जल की आवश्यकता का होती है)
- पानी के चैनलों को कवर करना

- **सन्दर्भ:**
- बिहार: लैंड, पीपुल एंड इकॉनमी
- विभिन्न प्रतियोगी पुस्तकें एवं इन्टरनेट

बोलेन्द्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक, भूगोल, रजा सिंह महाविद्यालय, सिवान